Dr. Nutissri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

U.G. Sem — IV

MJC — 05 : Western Philosophy

Plato - Theory of Idea
(प्लेटो का प्रत्यय - सिद्धान्त)

प्रत्यय सिद्धान्त (Theory of Ideas) ही प्लेटो के दर्शन का केन्द्र-बिन्दु है। यह प्लेटो का एक मौलिक सिद्धान्त है। इसका संबंध एक ओर ज्ञानमीमांसा से है तो दूसरी ओर तत्वमीमांसा से है क्योंकि प्रत्ययों की वास्तविक सत्ता है। प्लेटो के अनुसार आत्मा भी प्रत्ययों के लोक का निवासी है। उसका प्रत्ययवाद तथा आत्मवाद परस्पर अवियोज्य है। ज्ञान के विषय प्रत्यय हैं तथा प्रत्यय स्थिर, अपरिवर्तनशील तथा वास्तविक सत्ता हैं। प्लेटो कहता है कि हम अनेक सुन्दर वस्तुओं को देखते हैं किन्तु वास्तविक सौन्दर्य को नहीं देखते हैं। सौन्दर्य, न्याय, शुभत्व आदि के इन्द्रियानुभव में आने वाले विविध रूप विश्वास के विषय हैं। वास्तविक सौन्दर्य, न्याय, शुभत्व आदि सामान्य या प्रत्यय हैं। वे स्वरूपतः सार्वभौम सत्ता हैं। ~~उनका~~ उनका ज्ञान बौद्धिक अन्तर्दृष्टि (Rational Insight) से ही हो सकता है।

प्लेटो का प्रत्यय सिद्धान्त नैतिक, सौन्दर्यशास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रत्ययों पर लागू होता है के साथ-2 सभी सामान्य प्रत्ययों पर लागू होता है। यहाँ तक कि कुत्सता, अन्याय, अशुभत्व, असद्गुण आदि के भी प्रत्यय सामान्य और वास्तविक होते हैं। इसी प्रकार प्राकृतिक वस्तुओं, गुणों, सम्बन्धों आदि के प्रत्ययों को भी वास्तविक तथा वस्तुनिष्ठ माना गया है।

प्लेटो ने प्रत्ययों की सत्ता को इस जगत् से परे एक पृथक् लोक में सिद्ध करने के लिए पाँच युक्तियाँ दी हैं—

(1) विज्ञानमूलक तर्क (Argument from Science)

(2) अभेदमूलक तर्क (The Argument of the one over the many)

(3) अभावमूलक तर्क (The argument from the Knowledge of things that are no more)

(4) सम्बन्धमूलक तर्क (The argument from relation)

(5) तृतीय मनुष्यमूलक तर्क (The argument from the fallacy of the Third man)

विज्ञानमूलक तर्क के अनुसार इस लोक की वस्तुएँ अनित्य और परिवर्तनशील हैं। अतः वे ज्ञान का विषय नहीं हो सकती हैं। ज्ञान का विषय नित्य और अपरिवर्तनशील होना चाहिए। ये नित्य, अपरिणामी, और सामान्य तत्व ही प्रत्यय हैं। इस जगत् की दृश्यमान वस्तुएं विशेष हैं। अतः प्रत्ययों की सामान्यता तर्कतः सिद्ध होती है। यदि ये सामान्य प्रत्यय न हों तो ज्ञान और विज्ञान असंभव हो जायगा। दूसरे शब्दों में, ज्ञान की सार्वभौमिकता, नित्यता और स्थिरता प्रत्ययों के कारण है।

अभेदमूलक तर्क के अनुसार प्राकृतिक जगत् में पायी जाने वाली अनेक विशेष वस्तुएं सामान्य नहीं हो सकती हैं। इस जगत् की सभी वस्तुएं विशेष हैं। सामान्यों की सत्ता इस लोक की विशिष्ट वस्तुओं से भिन्न किसी अन्य लोक में होनी चाहिए।

अभावमूलक तर्क के अनुसार विशेषों के न होने पर भी किसी वर्ग के सामान्य स्वरूप का चिन्तन किया जा सकता है। यदि किसी वर्ग के अन्तर्गत आने वाली कुछ विशेष वस्तुएं न हों तो भी उनके सामान्य स्वरूप को जाना जा सकता है। इससे सिद्ध होता है कि विशेषों के अभाव में भी सामान्यों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

संबंधमूलक तर्क के अनुसार वस्तुओं को एक ही नाम या एक हो विधेय द्वारा तीन प्रकार से अभिधान किया जाता है— (1) जब उन वस्तुओं में एकरूपता या तादात्म्य (Likness – identity) हो। (2) जब उनमें गौतर सादृश्य (Similarity) हो अथवा (3) उनमें से एक दूसरे की प्रतिलीपि हो (Copy) हो। जब हम दो समान रेखाएँ खींचते हैं तो वे पूर्ण रूप से समान कभी नहीं होती। वे दोनों रेखाएँ समानता का केवल 'अनुकरण मात्र' हैं। संसार की वस्तुओं के इन प्रतिमानों को ही प्लेटो ने विज्ञान शब्द से अभिहित किया है।

तृतीय मनुष्यमूलक तर्क के अनुसार एक ही नाम से पुकारी जाने वाली विभिन्न वस्तुएँ एक वर्ग (Class) के अन्तर्गत आती हैं। ये वस्तुएं अपने 'नाम' की अपेक्षा कम व्यापक होती हैं। इससे सिद्ध होता है कि सभी विशेष वस्तुएँ एक सामान्य तत्व के साथ समान रूप से सम्बन्धित होती हैं। यह सामान्य तत्व ही प्लेटो के प्रत्यय का दूसरा नाम है।

प्लेटो ने प्रत्ययों के स्वरूप पर पाँच दृष्टियों से विचार किया है –

(1) तात्विक दृष्टि से (From Ontological Point of view) प्रत्यय पूर्ण सत्ता हैं। वस्तुओं का स्वरूप और अस्तित्व प्रत्ययों के कारण है। वस्तुओं की सत्ता प्रत्ययों में सहभागिता (Participation) के कारण है। प्लेटो के प्रत्यय इस जगत से भिन्न वास्तविक तत्व (सत्ता) के रूप में माने गये है।

(2) प्रयोजन की दृष्टि से (From teleological point of view) प्रत्यय वे नित्य साँचे हैं (आकार) हैं, जिनकी सहायता से ईश्वर प्राकृतिक जगत में स्थित वस्तुओं की रचना करता है। जगत की वस्तुएँ प्रत्ययों के प्रतिबिम्ब हैं। इससे सिद्ध होता है कि प्रत्यय सांसारिक वस्तुओं की रचना करने वाली प्रवर्तक शक्तियाँ हैं। किन्तु प्रत्यय स्वयं समस्त गतियों एवं परिवर्तनों से रहित है।

(3) आकारिक दृष्टि से (From formal point of view) प्रत्यय सामान्य अथवा वस्तुओं के सारतत्व हैं। वे ऐसी व्यापक शक्तियाँ हैं जिसके द्वारा हम सजातीय वस्तुओं को विजातीय वस्तुओं से पृथक् करते हैं। यद्यपि प्लेटो के दर्शन में प्रत्ययों से सम्बन्धित इन तीनों पक्षों का उल्लेख मिलता है, फिर भी उसने प्रत्ययों के तार्किक अथवा आकारिक पक्ष पर विशेष बल दिया है।

1- प्रत्यय द्रव्य है। द्रव्य की परिभाषा सामान्यतः यह दी जाती है – द्रव्य वह है जो अपने अस्तित्व के लिए किसी पर निर्भर नहीं है, जो किसी का विधेय नहीं होता बल्कि जिस पर विशेष आरोपित होते हैं। तथा गुण वह है जो द्रव्य के माध्यम से अस्तित्ववान होते हैं। इस प्रकार द्रव्य आत्मनिर्भर, स्वयंभू, और स्वतन्त्र है। इस अर्थ में प्रत्यय द्रव्य है। सामान्यतः दार्शनिक एक द्रव्य को परम तत्व के रूप में स्वीकार करते हैं। लेकिन प्लेटो कई द्रव्यों की कल्पना करता है। उसके अनुसार प्रत्यय अनेक, नित्य, अविनाशी, अविकारी हैं। वे किसी वस्तु पर आश्रित नहीं हैं। सारा संसार उन्हीं पर आश्रित है।

(2) प्रत्यय सामान्य (Universal) हैं। किसी विशेष वस्तु को प्रत्यय नहीं कहा जा सकता। अश्व का प्रत्यय किसी एक विशेष अश्व का द्योतक नहीं है। बल्कि सभी अश्वों का द्योतक है। यह सामान्य अश्व है। इसलिए इन्हें सामान्य भी कहा जाता है।

(3) प्रत्यय वस्तु नहीं बल्कि विचार (Thought) है। प्लेटो के अनुसार हम प्रत्यय का प्रत्यक्ष नहीं कर सकते। उनका ज्ञान हमें स्मृति द्वारा होता है। जैसे हम अश्व का तो प्रत्यक्ष कर सकते हैं लेकिन अश्वत्व का नहीं। ये विचाररूप हैं लेकिन किसी विशेष व्यक्ति के विचार नहीं हैं। यदि ये व्यक्ति के विचार होते तो प्लेटो के दर्शन में वही गलती होती जो सोफिस्ट दार्शनिकों ने की है।

(4) प्रत्येक प्रत्यय एक इकाई (Unit) है। यह विविधता में एकता है। एक वर्ग की वस्तुओं के लिए केवल एक ही प्रत्यय हो सकता है। एक से अधिक प्रत्यय नहीं हो सकते। विशेष वस्तुएँ अनेक हैं किन्तु उनके प्रत्यय एक हैं।

(5) प्रत्यय कूटस्थ निर्विकार (Imutable) और अविनाशी है। वे नित्य, शाश्वत, अव्यय और अक्षर रूप है। यदि जगत की सभी मनुष्य समाप्त भी हो जाए तो भी मनुष्य का प्रत्यय अमर रहेगा। सामान्य, विशेषों की सत्ताओं से परे है।

(6) प्रत्यय सार रूप हैं अर्थात् विशेष वस्तुओं में जो वास्तविकता या तात्विकता है उसका कारण प्रत्यय हैं। विशेश वस्तुएं अपने प्रत्यय की धुंधली प्रतिलीपियां होती हैं। कोई भी विशेष वस्तु अपने प्रत्यय की पूर्ण प्रतिलीपि नहीं है।

(7) प्रत्यय अपने आप में पूर्ण सत्ताएं हैं। जगत की वस्तुएं कम या अधिक मात्रा में पूर्ण होती हैं लेकिन वे जिस प्रत्यय में भाग लेती हैं वे पूर्ण होते हैं।

(8) प्रत्यय देश और काल के परे हैं। प्रत्यय कूटस्थ, नित्य और अपरिवर्तनशील हैं। यदि प्रत्यय देश और काल में रहते तो नश्वर और परिवर्तनशील होते। देश और काल का प्रश्न केवल अनित्य और परिवर्तनशील वस्तुओं के संदर्भ में ही उपस्थित होता है। प्लेटो ने काल की अनन्तता और नित्यता में भेद किया है। काल का अनन्त होना नित्य होना नहीं है बल्कि नित्यता का प्रतिबिम्ब है।

(9) प्रत्यय बुद्धि-गम्य हैं। 'विशेषों' का ज्ञान हम इन्द्रियानुभूति द्वारा प्राप्त करते हैं, पर विशेषों से पृथक 'सामान्य' का ज्ञान हम बुद्धि द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। प्लेटो रहस्यवादी (Mystic) नहीं थे, वे पूर्णरूप से बुद्धिवादी थे। प्रत्ययों का ज्ञान निर्विकल्पानुभूति (Intuition) द्वारा न होकर बुद्धि द्वारा ही होता है।

(10) प्रत्यय अनेक हैं, पर ये अनेक प्रत्यय सर्वथा पृथक् नहीं हैं उनके भीतर तारतम्य (~~Hierarchy~~ (Hierarchy) पाया जाता है। इन प्रत्ययों में आपस में श्रेणी-विभाजन है जिनमें उच्चतर प्रत्यय निम्नतर प्रत्ययों का निपमन करते हैं और निम्नतर प्रत्यय उच्चतर प्रत्ययों द्वारा संचारित और अनुप्राणित होते हैं। इस क्रम में हम उच्चतम प्रत्यय तक पहुँचते हैं। प्लेटो ने इसे शुभ के प्रत्यय के नाम से अभिहित किया है।

(11) प्लेटो के प्रत्यय इन्द्रिय-जगत में न रहकर अतीन्द्रिय जगत के निवासी हैं। इन्द्रिय जगत की वस्तुएँ विशेष और देश-काल द्वारा आवृत्त हैं, पर प्रत्यय जो सामान्य और देशकाल से अतीत हैं, अतीन्द्रिय जगत के ही निवासी हो सकते हैं। यही प्लेटो का द्वैतवाद है।

(12) 'प्रत्यय' 'सत्ता' और 'मूल्य' दोनों दृष्टियों से विशेषों की अपेक्षा श्रेष्ठतर हैं। प्लेटो के अनुसार प्रत्यय, विशेषों के 'प्रतिमान' या 'आदर्शरूप' हैं और विशेष उनके विवर्त मात्र हैं।

(13) प्रत्यय संख्या (Number) हैं। जीवन के अन्तिम दिनों में प्लेटो ने प्रत्यय और पाइथागोरस की संख्याओं के बीच तादात्म्य स्थापित करते हुए यह प्रतिपादित किया कि वे संख्या हैं। इस तथ्य का वर्णन उनके संवादों में नहीं मिलता। केवल अरस्तू के दर्शन से इस बात की सूचना मिलती है।

(4) ज्ञानमीमांसीय दृष्टि से (From Epistemological view) प्रत्यय ही ज्ञान के वास्तविक विषय हैं। प्रत्ययों की सहायता से भौतिक जगत का विश्लेषण करने वाले विज्ञानों के द्वारा अपने-2 क्षेत्रों में सार्वभौम और अनिवार्य नियमों की स्थापना की जाती है। फीडो में कहा गया है कि इन्द्रियानुभव से हमें प्रामाणिक ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यह अवश्य है कि हमें ऐन्द्रिक विषयों के द्वारा प्रत्ययों का संस्मरण (Reminiscence) होने में सहायता मिलती है। वस्तुतः प्रत्यय ही ज्ञान के यथार्थ आलंबन हैं। इनका ज्ञान बौद्धिक अन्तर्दृष्टि से होता है।

(5) रहस्यात्मक दृष्टि से (From Mystical point of view) प्रत्यय शुभ (Good) की अभिव्यक्तियाँ हैं। प्लेटो प्रत्ययों की एक व्यवस्थित शृंखला का विवेचन करता है। इस शृंखला में प्रत्ययों में परस्पर स्तरीय भेद है। प्रत्ययों की अभिव्यक्ति के अनेक स्तर हैं। उनमें उच्च स्तर और निम्न स्तर का भेद या तारतम्य है। उच्च स्तरीय प्रत्यय निम्न स्तरीय प्रत्ययों का निगमन करते हैं। इस स्तरीय तारतम्य के अन्तर्गत सर्वोच्च स्तर पर शुभ का प्रत्यय (Idea of Good) है। शुभ का प्रत्यय अन्य प्रत्ययों से भिन्न है क्योंकि अन्य सभी प्रत्यय 'शुभ' की अभिव्यक्तियां हैं। इसे प्रत्ययों का प्रत्यय (Idea of Ideas) भी कहा जा सकता है। प्लेटो के दर्शन में शुभ का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा है। इसे ईश्वर का पिता कहा गया है। शुभ को पर (Transcendent) और अन्तर्व्याप्त (Immanent) दोनों माना गया है। अन्य प्रत्ययों की विविधता या अनेकता शुभ के प्रत्यय में लय हो जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्लेटो सम्यक् ज्ञान के विषय के रूप में अपने प्रत्ययवाद का प्रतिपादन करता है। प्लेटो के प्रत्यय सुकरात के संप्रत्यय (Concepts) से भिन्न हैं। जहाँ सुकरात के प्रत्यय मानसिक हैं, वहाँ प्लेटो के प्रत्यय ऐसी सामान्य सत्ता हैं जो इस लौकिक जगत से भिन्न एक अलौकिक जगत या प्रत्यय-लोक (The World of Ideas) में रहते हैं। यद्यपि प्रत्ययों की सत्ता इस लोक में नहीं है, तथापि वह प्राकृतिक जगत की वस्तुओं के समान ही वास्तविक हैं। यहाँ तक कि इस लोक की वस्तुएं भी प्रत्ययों की ही अभिव्यक्तियाँ हैं।

प्रत्ययों में निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं—